बाइबल अध्ययन II

व्यावहारिक बाइबल अध्ययन II: पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ -

सत्र #१:

I. खंड #१: फिलि. २:१९-३०।

सत्र #२:

I. खंड #१। (जारी.)

II. खंड #२: फिलि. ३:१-४:९।

सत्र #३:

II. खंड #२। (जारी.)

सत्र #४:

II. खंड #२। (जारी.)

III. खंड #३: फिलि. ४:१०-२०।

सत्र #५:

III. खंड #३। (जारी.)

IV. खंड #४: फिलि. ४:२१-२३।
परीक्षा

टिप्पणियाँ -

व्यावहारिक बाइबल अध्ययन II: परीक्षा

“आगमनात्मक बाइबल अध्ययन" पाठ्यक्रमों में अन्य पाठ्यक्रमों के समान परीक्षा नहीं होती है। परीक्षा के समय का उपयोग वास्तव में आगमनात्मक बाइबल अध्ययन करने के लिए किया जाता है।

इस दूसरे "व्यावहारिक बाइबल अध्ययन" पाठ्यक्रम में, परीक्षा अवलोकन करने पर ध्यान केंद्रित करना जारी रखती है, और व्याख्यात्मक प्रश्नों की भी आवश्यकता होती है। छात्र को बाइबल से एक गद्यांश दिया जाता है और वह उस परीक्षा के समय का उपयोग उस भाग का अध्ययन करने और अवलोकन और प्रश्न बनाने के लिए करेगा। छात्र को अपने सात सबसे महत्वपूर्ण अवलोकन और व्याख्यात्मक प्रश्न जमा करने होते हैं। अवलोकन/प्रश्न के जोड़ों में से दो में एक व्याख्यात्मक उत्तर सम्मिलित होना चाहिए। अवलोकनों और प्रश्नों को महत्व, अंतर्दृष्टि, स्पष्टता आदि के अनुसार अंक दिया जाता है।

बाइबल अध्ययन II

टिप्पणियाँ -

पाठ्यक्रम परिचय:

पूर्व आवश्यकता: बाइबल अध्ययन और व्यावहारिक बाइबल अध्ययन I का परिचय।
यह व्यावहारिक बाइबल अध्ययन श्रृंखला का दूसरा पाठ्यक्रम है। श्रृंखला उन सामग्रियों की समझ पर आधारित है जिन्हें परिचय पाठ्यक्रम में पढ़ाया गया था।

हम फिलिप्पियों की पुस्तक का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन की अपनी आधारभूत समझ का उपयोग करेंगे। हम फिलिप्पियों की पुस्तक में पहले ही अवलोकन कर चुके हैं और हमने पुस्तक का परिचय प्रस्तुत किया है।

इस पाठ्यक्रम का प्रारूप।

हम फिलिप्पियों २:१९-४:२३ का अध्ययन करेंगे। हम परिचय पाठ्यक्रम में विकसित की गई पुस्तक के आठ खंडों की रूपरेखा के अनुसार पाठ्यक्रम को चार खंडों में विभाजित करेंगे।

प्रत्येक खंड में अध्ययन के पाँच क्षेत्र होंगे:

१) एक संक्षिप्त परिचय।

२) वचन का अध्ययन (वुएस्ट्स वर्ड स्टडीज' और अन्य यूनानी संदर्भ सहायक सामग्री का उपयोग करते हुए)।

३) संरचना का अध्ययन (इसमें वह प्रक्रिया सम्मिलित होगी जो हमें अवलोकन से व्याख्या और उसे अनुप्रयोग करने की ओर ले जाती है)।

४) संरचना की रूपरेखा (हम प्रत्येक खंड के भागों के बीच संबंधों के प्रवाह को संक्षेप में प्रस्तुत करेंगे)।

५) एक निष्कर्ष (इसमें गद्यांश का एक वाक्य सारांश विवरण और तीन या चार शब्द का शीर्षक सम्मिलित होगा जो गद्यांश का ध्यान आकर्षित करता है)।

ध्यान दें: हम अपने अध्ययन में न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल का उपयोग करेंगे।

टिप्पणियाँ -

I. खंड #१ (फिलि. २:१९-३०)।

क. खंड #१ का परिचय।

१. पिछले भाग में पौलुस ने फिलिप्पी वासियों को कई शिक्षाप्रद चुनौतियाँ दीं। उन्होंने उनके लिए अपनी व्यक्तिगत चिंता के विषय में लिखा। उन्होंने मसीह में उनकी स्थिति के विषय में जानने की इच्छा व्यक्त की।

२. इस सन्दर्भ में वह समझाने लगते हैं कि वह तीमुथियुस और इपफ्रुदीतुस को उनके पास भेजेंगे।

ख. खंड # १ का शब्द अध्ययन।

१. भरोसा (पद २४) – का अर्थ है मनाना (पूर्ण काल); इस प्रकार: "मैं आश्वस्त हूँ।"

२. भाई (पद २५) – का अर्थ है एक ही गर्भ या मूल से; एक ही स्तर पर। पौलुस, अपनी नम्रता में, फिलिप्पी संदेशवाहक को अपने स्तर पर रखता है।

३. सहकर्मी और संगी योद्धा (पद २५) - पौलुस के लिए सहकर्मी एक सैनिक है।

४. व्याकुल (पद २६) – का अर्थ है मन की एक बेचैन स्थिति जो दु:ख से उत्पन्न हुई है। केवल एक और जगह जहाँ इस शब्द का प्रयोग किया गया है (मत्ती २६:३७; मरकुस १४:३३) वह गतसमनी के बाग़ में यीशु की भावना के संदर्भ में है। इपफ्रुदीतुस में यह भावना ज़ोर से है क्योंकि वह जानते थे कि दूसरे उसके विषय में चिंतित हैं।

५. जोखिम उठाकर (पद ३०) – अर्थात दांव पर लगाना; स्वयं को खतरे में डालना। पौलुस के प्रति अपनी सेवकाई में, इपफ्रुदीतुस ने उस प्रेम के रवैये को प्रदर्शित किया जिसके विषय में यूह. १५:१३ में बोला गया है।

ग. खंड # १ की संरचना का अध्ययन।

टिप्पणियाँ -

१. अवलोकन/व्याख्या/अनुप्रयोग।

क. अवलोकन और व्याख्या।

१) इस गद्यांश को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

क) पौलुस तीमुथियुस को भेजने की आशा रखते हैं (पद १९-२३)।

ख) पौलुस को आशा है कि वह स्वयं जाने में सक्षम होंगे (पद २४)।

ग) पौलुस इपफ्रुदीतुस को भेजते हैं (पद २५-३०)।

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस तीमुथियुस को क्यों भेजना चाहते हैं?

२) पौलुस पद १९ में इसका उत्तर **"ताकि"** शब्द के साथ देते हैं।

क) पौलुस फिलिप्पी के लोगों की स्थिति जानना चाहते हैं (देखें १:२७ और २:१२)। वह तीमुथियुस को एक संवाददाता के रूप में भेज रहे हैं। वह वापस पौलुस को रिपोर्ट देंगे ("तुम्हारी दशा सुनकर" शब्दों पर ध्यान दें)।

ख) पौलुस तीमुथियुस को पहले से ही स्थापित स्थानीय कलीसिया का पासबान बनने के लिए नहीं भेज रहे हैं। तीमुथियुस को स्थानीय कलीसिया को चलाने के लिए नहीं भेजा गया है। वह निरीक्षण करने और प्रोत्साहित करने जाएगा। यह विशिष्ट उद्देश्य के साथ एक विशिष्ट सेवा नियुक्त कार्य है। इसके अलावा, वह वहाँ कितने समय तक रहेंगे, इस संबंध में स्थायित्व का कोई बोध नहीं है। यह एक दौरा है।

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस विशेष रूप से तीमुथियुस को क्यों भेजते हैं?

टिप्पणियाँ -

३) पौलुस इस प्रश्न का उत्तर पद २० में **"क्योंकि"** शब्द के साथ देते हैं।

क) क्योंकि उन्हें किसी और पर भरोसा नहीं है (पद २०, २१)। पौलुस किसी ऐसे व्यक्ति को चुनते हैं जो उन्हीं के समान है ("मन से चिंता करने वाला")।

कोई ऐसा व्यक्ति जिसके पास गंभीर उद्देश्य और चिंताएँ हों (प.२०)

कोई जो यीशु के हितों के लिए चिंतित हो (प. २१)

कोई जो केवल अपने हितों और उद्देश्यों के विषय में चिंतित नहीं होता (प. २१)

ख) क्योंकि तीमुथियुस ने स्वयं को **"लायक साबित"** किया। पौलुस को एहसास हुआ कि उसे किसी ऐसे व्यक्ति को भेजना चाहिए जो भेजने के योग्य हो।

कोई ऐसा जिसने स्वयं को साबित किया हो (प. २२)

सेवकाई में

वह दूसरों के साथ काम करने में सक्षम है "मेरे साथ"

वह समर्पित करने में सक्षम है "पिता को अपने बच्चे"

व्याख्यात्मक प्रश्न

तीमुथियुस को कब भेजा जाएगा?

४) पौलुस कहते हैं **"तुरन्त"** (पद २३)। हालाँकि, यह पौलुस की परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

टिप्पणियाँ -

व्याख्यात्मक प्रश्न

क्या इसका यह अर्थ है कि पौलुस यह नहीं सोचते कि वह स्वयं उनसे मिलने जाएंगे?

५) नहीं! पौलुस वास्तव में कहते हैं कि वह आश्वस्त है (शब्द अध्ययन देखें) कि वह जल्द ही आएंगे। पद २४ में **"और"** शब्द तीमुथियुस और पौलुस की प्रस्तावित यात्राओं को जोड़ता है।

क) यहाँ हमारे पास विश्वास का एक सबक है। पहले से सोचे हुए काम के अलावा कुछ करना विश्वास का इनकार नहीं है।

ख) यदि पौलुस को विश्वास है कि वह शीघ्र ही उनसे मिलने आएंगे, तो वह सूचना प्राप्त करने के लिए तीमुथियुस को क्यों भेजना चाहते हैं? हाँ, पौलुस के पास विश्वास है कि वह उनसे मिलने जाएंगे। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि वह जानकारी लेने के लिए किसी और को अभी नहीं भेज सकता। एक विधि के माध्यम से किसी लक्ष्य की ओर बढ़ना, जबकि विश्वास में प्रतीक्षा करते हुए एक अन्य विधि के माध्यम से उसी लक्ष्य की ओर बढ़ना **आवश्यक रूप से** विश्वास की कमी या विश्वास की अस्वीकृति का संकेत **नहीं** है (अध्ययन १:२५-२७)।

ख. अनुप्रयोग।

१) क्या हम पहले से स्थापित स्थानीय कलीसिया को चलाने के लिए नियुक्त सेवा-कार्यकर्ताओं को भेजते हैं? क्या हम एक विशिष्ट सेवा- नियुक्त कार्य पर आगंतुकों के रूप में जाते हैं जो देते और फिर चले जाते हैं? या हम उन मालिकों के रूप में जाते हैं जिनकी आवश्यकता नहीं है परन्तु जो अपनी स्वयं की सेवकाईयों को संतुष्ट करना चाहते हैं?

२) क्या हम उन्हें भेजते हैं जो साबित किए हों? जो भेजे गए हैं क्या वे अपना राज्य या परमेश्वर का राज्य बनाने गए हैं? क्या सेवा-नियुक्त कार्यकर्त्ता वास्तविक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं? क्या उनके पास कोई **सेवा-नियुक्त कार्य** है (विशिष्ट और इसलिए प्रभावी और कुशल)? या वे केवल बस **सेवा-नियुक्त कार्य कर रहे हैं** (सामान्य और इसलिए अप्रभावी और अक्षम)?

टिप्पणियाँ -

३) क्या आप उन सभी में सम्मिलित हैं जो अपने हितों की खोज में इतने व्यस्त हैं कि उनके पास सेवा-नियुक्त कार्य के काम के लिए समय या रुचि नहीं है? संभवत: रोम में १००० मसीही थे। केवल एक ही जाने को तैयार थे। इसका परिणाम पौलुस की ओर से कड़ी फटकार के रूप में आया। क्या आपको लगता है कि जाने को तैयार वालों के उसी अनुपात के लिए पौलुस आज हमें फटकारेंगे? उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमरिका में अनुमानित रूप से ५०,०००,००० मसीही हैं। हालाँकि, संयुक्त राज्य अमरिका केवल ५०,००० सेवा-नियुक्त कार्यकर्ताओं को भेजता है।

४) क्या आपके पास उस प्रकार का विश्वास है जो आपको लक्ष्य की ओर बढ़ने की अनुमति नहीं देता है क्योंकि इस कार्य को विश्वास का इनकार माना जा सकता है? या क्या आपके विश्वास में एक ही समय पर प्रतीक्षा करने और कार्य करने की क्षमता है?

चर्चा विषय

क्या आप दवाई लेने से इनकार करते हैं या डॉक्टर के पास नहीं जाते हैं क्योंकि आप अलौकिक चंगाई में अपने विश्वास का "इनकार" नहीं करना चाहते हैं? या आपका विश्वास चंगाई में प्रतीति करते हुए चलता है और कार्य करता है, परन्तु चिकित्सा सहायता के उपयोग की अनुमति भी देते हैं? अन्य व्यावहारिक तरीकों पर चर्चा करें जिससे विश्वास की यह समझ हमारे जीवन को प्रभावित कर सकती है।

टिप्पणियाँ -

२. अवलोकन/व्याख्या/अनुप्रयोग।

क. अवलोकन और व्याख्या।

१) पौलुस स्वयं फिलिप्पी जाने की अपेक्षा करते हैं। कम से कम, वह तीमुथियुस को भेजने की आशा रखते हैं। अभी के लिए, वह निश्चित रूप से इपफ्रुदीतुस को भेजेंगे।

व्याख्यात्मक प्रश्न

इपफ्रुदीतुस कौन हैं?

२) वह **पौलुस** और **फिलिप्पी वासियों** से संबंधित हैं (पद २५ की संरचना के आरेख का अध्ययन करें)। आरेख से पता चलता है कि इपफ्रुदीतुस हैं:

क) **फिलिप्पी** से एक संदेशवाहक/सेवक।

ख) जो **पौलुस** की आवश्यकताओं को पूरा कर रहे हैं।

पौलुस के सम्बन्ध में		फिलिप्पी वासियों के सम्बन्ध में
मेरा भाई		आपका संदेशवाहक
मेरा (निहित) साथी	जो निम्न भी है:	आपका (निहित) सेवक
मेरी आवश्यकता		प्रति

३) पौलुस फिलिप्पियों के पास उसे लौट रहे हैं जिन्हें उन्होंने उनके पास भेजा था।

क) फिर से, हम देखते हैं कि वे इसमें चयनात्मक हैं कि वे अपने किसे "सेवा-नियुक्त कार्यकर्त्ता" के रूप में भेजते हैं। इपफ्रुदीतुस स्पष्ट रूप से परमेश्वर के एक सामर्थी व्यक्ति हैं।

ख) पौलुस इपफ्रुदीतुस को उनके साथ एक समान स्तर पर होने के रूप में वर्णित करते हैं। वह उन्हें एक **सहकर्मी** और **योद्धा** कहते हैं।

टिप्पणियाँ -

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस इपफ्रुदीतुस को वापस क्यों भेजते हैं?

४) पौलुस उन्हें वापस भेजने के तीन कारण बताते हैं।

क) पहला कारण पद २६ में **"क्योंकि"** शब्द द्वारा बताते हैं। इपफ्रुदीतुस लौट गए क्योंकि फिलिप्पियों को **"वह याद कर रहे थे"।** वह यह सोचकर व्याकुल थे कि फिलिप्पी के लोग उनकी बीमारी से परेशान थे। यहाँ हम उस शुद्ध प्रेम और परवाह को देखते हैं जो इपफ्रुदीतुस को अपने लोगों के लिए थी। पौलुस इससे घृणा नहीं करते और कहते हैं कि एक सेवा-नियुक्त कार्यकर्त्ता के रूप में इपफ्रुदीतुस को अपनी मातृभूमि के विषय में चिंतित नहीं होना चाहिए। इसके बजाय, वह उनके लोगों के लिए इपफ्रुदीतुस के प्रेम का आदर और सम्मान करते हैं और इसे सेवा-नियुक्त कार्यकर्त्ता के जाने के कारण के रूप में देखते हैं।

ख) दूसरा कारण पद २८ में **"इसलिए किया कि"** शब्दों द्वारा बताते हैं। परमेश्वर ने इपफ्रुदीतुस को चंगा किया। पौलुस की फिलिप्पी वासियों के साथ आनन्द बाँटने की सच्ची इच्छा है। वह चिंतित हैं कि वे आनन्दित हों और चिंता न करें।

ग) तीसरा कारण दूसरे कारण की निरंतरता है। पद २८ में पौलुस कहते हैं, **"(इसलिए किया कि) मेरा भी शोक घट जाए।"** पौलुस, इपफ्रुदीतुस के समान, चिंतित हैं कि फिलिप्पी के लोगों को चिंता है। वह इपफ्रुदीतुस से प्रेम करते हैं (पद २७ में उनके शब्दों पर ध्यान दें "कि मुझे शोक पर शोक न हो")। इपफ्रुदीतुस पौलुस की **"आवश्यकता"** के प्रति सेवा करते हैं और उसके लिए एक लाभ है। फिर भी वह दूसरों की खातिर उन्हें वापस भेजने को तैयार हैं। इस प्रकार, पौलुस मसीह के उस रवैये को प्रदर्शित करते हैं जिसके विषय में उन्होंने पहले लिखा था। वह दूसरों को प्राथमिकता देते हैं और उनकी **"आवश्यकताओं"** को अपनी से अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं।

टिप्पणियाँ -

५) फिर पौलुस निर्देश देते हैं कि फिलिप्पी के लोगों को इपफ्रुदीतुस से कैसे भेंट करनी चाहिए:

क) आनन्द के साथ।

ख) उनका आदर दिखाकर।

व्याख्यात्मक प्रश्न

फिलिप्पी के लोगों को इपफ्रुदीतुस को क्यों आदर के साथ ग्रहण करना चाहिए?

६) पौलुस इस प्रश्न का उत्तर बहुत स्पष्ट रूप से देते हैं जब वह पद ३० में **"क्योंकि"** शब्द का उपयोग करते हैं।

क) क्योंकि उन्होंने स्वयं को सुसमाचार के लिए दे दिया। उन्होंने सुसमाचार की सेवकाई में अपनी जान जोखिम में डाली।

ख) पौलुस का यह रवैया नहीं है कि बीमारी को नकारात्मक तरीके से देखा जाना चाहिए। इसके बजाय, वह कहते हैं कि इपफ्रुदीतुस का उनकी बीमारी के कारण आदर किया जाना चाहिए। तो क्या हम सभी को बीमार होने का प्रयास करना चाहिए? जब कि पौलुस कहेंगे, "ऐसा कभी न हो।" बात यह नहीं है। ऐसा नहीं है कि बीमारी स्वयं में एक सकारात्मक चीज है। यह केवल इतना है कि स्वास्थ्य, हर चीज के समान, महत्व और मूल्य में मसीह के प्रभुत्व के अधीन है। यदि मसीह का अनुसरण करने और उनकी सेवा करने की क़ीमत स्वास्थ्य की हानि है, तो हमें कीमत चुकाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

कुछ आधुनिक मसीही इस व्याख्या से असहमत होंगे। परन्तु उन्हें पौलुस से भी असहमत होना पड़ेगा। पौलुस यहाँ एक लंबे प्रवचन में नहीं जाते कि कैसे अलौकिक स्वास्थ्य हमारे दावा करने के लिए है। वह यह नहीं कहते कि इपफ्रुदीतुस में विश्वास की कमी थी। वह यह तर्क नहीं देते कि बीमारी नहीं होनी चाहिए थी। वह इसे नकारात्मक रूप से नहीं देखते। वह इसे सकारात्मक रूप से देखते हैं। क्यों? क्योंकि पौलुस के लिए, शारीरिक कठिनाई मसीह का अनुसरण करने का एक संभावित परिणाम था (देखें ४:१२; १ कुरिं. ४:११-१३; २ कुरिं. ११:२३-२७; २ कुरिं. ६:३-५)। सकारात्मक प्रतिक्रिया बीमारी के कारण नहीं है। यह इस कारण है कि बीमारी ने क्या दर्शाया था। इसने मसीह के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता और समर्पण का प्रतिनिधित्व किया था। पौलुस इस प्रकार बोल सकते थे क्योंकि उनके पास ऐसा कोई धर्मविज्ञान नहीं था जो शारीरिक स्वास्थ्य को उद्धार के समान स्तर पर रखता हो। उद्धार, और इसलिए मसीह का प्रभुत्व, किसी भी परिस्थिति से बहुत ऊपर था। इन निष्कर्षों से संबंधित चर्चा को बढ़ावा दें।

ग) हम यहाँ इस बात पर भी ध्यान दे सकते हैं कि अलौकिक चंगाई पर पौलुस का धर्मविज्ञान "अधिकारों" और "दावों" की तुलना में परमेश्वर की संप्रभुता पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है जो उसके पास एक मसीही के रूप में हैं। उनका कहना है कि परमेश्वर ने इपफ्रुदीतुस पर दया की थी (पद २७)। इसके अलावा, शब्द "ऐसा न हो कि" का अर्थ है कि पौलुस समझ गया था कि एक संभावना थी कि चंगाई नहीं होगी। हाँ, पौलुस ने अलौकिक चंगाई में विश्वास किया और उसका उपयोग किया। उनके लिए उनका विश्वास था। परन्तु उनका विश्वास इतना शुद्ध और गहरा था कि वह अभी भी परमेश्वर को संप्रभु होने की अनुमति दे सकते थे।

ख. अनुप्रयोग।

१) क्या आप एक ऐसे सेवक छोड़ देने के इच्छुक हैं जो आपकी सेवकाई की सहायता कर रहा है ताकि वह किसी अन्य सेवकाई के लिए आशीष बन सके? क्या आपकी आवश्यकता दूसरों की आवश्यकताओं पर भारी पड़ती है? या क्या आपका स्वार्थ आपको केवल अपनी आवश्यकताओं को देखने की अनुमति देता है?

२) क्या आप बीमारी के विषय में सकारात्मक दृष्टिकोण और परमेश्वर की संप्रभुता हेतु जगह बनाते हुए चंगाई के लिए विश्वास कर सकते हैं। क्या आप किसी के बीमार होने का आदर कर सकते हैं? या क्या आपका धार्मिक दृष्टिकोण पौलुस के निर्देशों का पालन करना असंभव बना देता है? क्या आप अलौकिक चंगाई को परमेश्वर की प्रभुता, अनुग्रह और "दया" के अधीन होने के रूप में समझते हैं (देखें पद २७)? या क्या आप इसे मसीहियों के एक अविभाज्य "अधिकार" के रूप में देखते हैं जो परमेश्वर को चंगा करने का "आदेश" दे सकता है?

टिप्पणियाँ -

३) क्या आप अपने स्वास्थ्य के विषय में मसीह के लिए सब कुछ देने से अधिक चिंतित हैं? आपके स्वास्थ्य के विषय क्या? आपके जीवन के विषय में क्या? यदि पौलुस के पास ऐसा दृष्टिकोण होता जो स्वास्थ्य को मसीह के प्रभुत्व के समान स्तर पर रखता, तो वह बीमार होने पर इपफ्रुदीतुस को ताड़ना देते (जैसा कि कुछ शिक्षाएँ आज करती हैं, और जैसे कि हजारों वर्ष पहले अय्यूब के दिलासा देने वालों की शिक्षा थी)। इसके बजाय, पौलुस ने इपफ्रुदीतुस का आदर किया। पौलुस के लिए, मसीह को सब कुछ सौंपना शारीरिक स्वास्थ्य से अधिक महत्वपूर्ण है। स्वास्थ्य मसीह के प्रभुत्व के अधीन है। क्या आप ये कह सकते हैं?

४) क्या आप पौलुस के साथ कह सकते हैं कि आप मसीह के लिए कष्ट, मार-पीट, भूख, प्यास, बीमारी, और यहाँ तक कि मृत्यु भी सहने को तैयार हैं?

चर्चा विषय

कक्षा की चर्चा को बढ़ावा देने के लिए कुछ "लोकप्रिय" शिक्षाओं के पहलुओं के लिए निम्नलिखित प्रश्नों और संदर्भों का उपयोग करें।

स्मरण रखें कि हमारे पास अधिकारों का दावा करने का उदाहरण नहीं बल्कि दूसरों के लिए और परमेश्वर की महिमा के लिए अधिकार को एक ओर रखने का है। हाँ, पौलुस अलौकिक चंगाई में विश्वास करते हैं। हालाँकि, उनकी शिक्षा संतुलित है।

घ. खंड #१ की संरचना की एक रूपरेखा।

१. पौलुस तीमुथियुस को भेजने की आशा रखते हैं (पद १९-२३)।

क) एक रिपोर्ट पाने के लिए (पद १९)।

ख) तीमुथियुस को विशेष रूप से भेजने का कारण (पद २०-२२)।

१) किसी और पर विश्वास नहीं (पद २०, २१)।

२) साबित किया हुआ (पद २२)।

ग) उन्हें कब भेजा जाएगा (पद २३)।

टिप्पणियाँ -

२. पौलुस को आशा है कि वह स्वयं जल्द ही आएँगे (पद २४)।

३. पौलुस अभी इपफ्रुदीतुस को भेजते हैं (पद २५-३०)।

क) इपफ्रुदीतुस की पहचान (पद २५)।

ख) उन्हें भेजने के कारण (पद २६-२८)।

१) इपफ्रुदीतुस फिलिप्पी के लोगों के विषय में चिंतित हैं (पद २६)।

२) पौलुस फिलिप्पी के लोगों के साथ आनन्द साझा करना चाहते हैं (पद २८)।

३) पौलुस फिलिप्पी के लोगों के विषय में चिंतित हैं (पद २८)।

ग) उनके साथ आदर से भेंट करने के निर्देश (पद २९, ३०)।

१) निर्देश दिया गया (पद २९)।

२) निर्देश का कारण (पद ३०)।

लेखक की टिप्पणी:

रूपरेखा का उपयोग करते हुए, छात्रों को भागों (उद्देश्य, स्पष्टीकरण, निष्कर्ष, परिवर्तन, कारण) के बीच संबंधों की पहचान करने के लिए चुनौती दें।

ङ. खंड #१ का निष्कर्ष।

१. सारांश वाक्य। पौलुस अपने विश्वास को दोहराते हैं कि वह जल्द ही फिलिप्पी के लोगों से मिलने आएँगे और वह यह भी बताते हैं कि वह तीमुथियुस और इपफ्रुदीतुस को कब और क्यों भेजेंगे।

२. शीर्षक। पौलुस दूसरों को भेजते हैं।

II. खंड #२ (फिलि. ३:१-४:९)।

टिप्पणियाँ -

क. खंड #२ का परिचय।

१. पौलुस पत्र के निष्कर्ष की ओर बढ़ते हैं। यह वास्तव में एक दोहरा निष्कर्ष है (३:१ और साथ ही ४:८) में "इसलिए" शब्द के उपयोग पर ध्यान दें।.

२. पौलुस अंतिम निर्देश और चुनौतियाँ देते हैं। वह फिलिप्पी के लोगों को धोखेबाजों के विरुद्ध चेतावनी देने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

ख. खंड #२ का शब्द अध्ययन।

१. प्रभु में आनन्दित रहो (३:१) - मनुष्य में आनन्दित होने के विपरीत (गला. ६:१२ देखें)। पौलुस अपनी चेतावनी को उन यहूदियों के विरुद्ध ले जा रहे हैं जो व्यवस्था और मनुष्य की उपलब्धियों में आनन्दित होना चाहते थे।

२. चौकस रहो (पद २) - इसका अर्थ है बचने के विचार से निरंतर सतर्क रहना।

३. कुत्ते (पद २) - यहूदी सड़कों पर घूमने वाले कुत्तों को सबसे तुच्छ जानवर मानते थे। संभवतः यहाँ तस्वीर यहूदीवादियों की है जो मसीही मंडलियों के चारों ओर घूमते हैं, और धर्मान्तरित लोगों को विधि-सम्मत यहूदी धर्म में जीतने का प्रयास कर रहे हैं।

४. उपासना (पद ३) - का अर्थ है सेवा करना, सहायता करना; विशेष रूप से यहूदी लोगों द्वारा परमेश्वर की सेवा का वर्णन करने के लिए उपयोग किया गया है। इस प्रकार, पौलुस अपनी बात में बहुत सीधे हैं। वह कुत्ते शब्द का प्रयोग करते हैं जिसे यहूदी अन्यजातियों के लिए उपयोग करते थे। वह खतना शब्द का प्रयोग करते हैं जो एक यहूदी संस्कार था। वह यहूदी शब्द "उपासना" का उपयोग करते हैं। यह सब उस महान "परिवर्तन" पर जोर देने के लिए है जो परमेश्वर की छुटकारे की योजना (अन्यजातियों को मिलाकर) में हुआ है और उन लोगों के विरुद्ध चेतावनी देने के लिए जो इस परिवर्तन को स्वीकार नहीं करते हैं।

५. सब बातों (पद ८) - संभवतः बहुत अधिक धन सम्मिलित है। उस समय तरसुस का नागरिक होने के लिए (जो पौलुस थे) वह धन और प्रतिष्ठा के परिवार से होंगे। निश्चित रूप से जब हम यहूदी धर्म में पौलुस की शिक्षा और स्थिति के तात्पर्य पर विचार करते हैं, तो उस धन, प्रतिष्ठा और पद की कल्पना करना कठिन नहीं है जिसे उन्होंने गरीब और तिरस्कृत सेवा-नियुक्त कार्यकर्त्ता बनने के लिए त्याग दिया।

टिप्पणियाँ -

६. पाया जाऊँ (पद ९) - का अर्थ है चरित्र का प्रकाशन जैसा कि दूसरों ने देखा है।

७. सिद्ध (पद १२) - का अर्थ है आत्मिक रूप से परिपक्व (पापरहित नहीं)।

८. भूल कर (पद १३) - का अर्थ है पूरी रीति से भूल जाना; जैसे एक दौड़ने वाला उन लोगों को भूल जाता है जो दौड़ में उसके पीछे हैं ताकि उसका ध्यान न भटके।

९. बढ़ता हुआ (पद १३) - का अर्थ है स्वयं को एक लक्ष्य की ओर खींचना। यह एक और खेल सम्बंधित शब्द है जिसका उपयोग उस दौड़ने वाले का वर्णन करने के लिए किया गया था जो समापन रेखा पर दृष्टि बनाए हुए उसकी ओर खींचा चला जा रहा है।

१०. की ओर (पद १४) - का अर्थ है नीचे; लक्ष्य की ओर बढ़ना। फिर से दौड़ने वाले का सदृश्य जारी है। यह दौड़ने वाले की तीव्रता का एक वर्णनात्मक शब्द है जब वह लक्ष्य की ओर बढ़ने का प्रयास करता है।

११. सिद्ध (पद १५) - यहाँ इसे संज्ञा के रूप में प्रयोग किया गया है (पद १२ में पौलुस ने क्रिया का उपयोग यह कहने के लिए किया था कि अभी भी बढ़ने की जगह थी; प्रक्रिया पूरी नहीं हुई थी)। यहाँ संज्ञा का उपयोग सापेक्षिक विवरण देने के लिए किया गया है (जो परिपक्व नहीं हैं उनके विपरीत जो परिपक्व हैं)।

१२. अनुकूल (पद २१) - का अर्थ है बाहरी रूप और अंदरूनी चीज़ का परिवर्तन।

१३. प्रभाव (पद २१) - का अर्थ है उत्तम मानव ऊर्जा या परिश्रम।

१४. यूओदिया (४:२) - नाम का अर्थ है "समृद्ध यात्रा" या "सफल"।

१५. सुन्तुखे (पद २) - नाम का अर्थ है "सुहाना परिचित"; "किसी से मिलना।" इन दोनों के बीच हो सकता है कि संघर्ष एक ऐसा संघर्ष रहा हो जो उनके नाम के अर्थ के अनुरूप हो। कार्योन्मुखी अगुवे ("सुहाना परिचित") के विरुद्ध लोकोन्मुखी अगुवा ("सफल")।

टिप्पणियाँ -

१६. सच्चा सहकर्मी (पद ३) - यह संभवत: एक उचित नाम है (ध्यान दें कि यह एकवचन है; "तुझ" भी एकवचन है)। पौलुस कहते हैं, "मैं तुझ (एकवचन) से भी विनती करता हूँ" जब वह व्यक्तियों से अपने व्यक्तिगत अनुरोधों को जारी रखते हैं। नाम का शाब्दिक अर्थ है "सच्चा साथी" (वह जो किसी और के साथ खींचता है)। पौलुस एक ऐसे व्यक्ति से अपनी विनती करते हैं जो दूसरों के साथ एकता में काम करते हैं। वह चाहते हैं कि यह व्यक्ति दूसरों को यह सीखने में सहायता करे कि यह कैसे करना है। पौलुस एक महान अगुवे थे। वह जानते थे कि अधिकार कैसे सौंपना है। एक प्रेरित के रूप में (इफि ४:११) वह जानते थे कि कैसे "पवित्र लोगों को सुसज्जित करना है" (शाब्दिक रूप से "टुकड़ों को प्रभावी ढंग से एक साथ जोड़ना")।

१७. विनती (पद ३) - का रथ है अधिकार से अनुरोध करना। पद २ में पौलुस "समझाता" शब्द का उपयोग करते हैं जिसमें अधिकार सम्मिलित नहीं है और कम सीधा है। इसका अर्थ है मांगना या विनती करना। हम यहाँ बुद्धिमान प्रेरित की संवेदनशीलता और कूटनीति को देख सकते हैं। पौलुस उन लोगों के साथ व्यवहार करते हैं जो एक दूसरे की संगति से बाहर हैं। वह उनसे सावधान रहते हैं और धीरे-धीरे उन्हें मिलाने के लिए आगे बढ़ता है। यह शांति बनने के गुण का भाग है। यह भी ध्यान दें कि पौलुस अचानक या आक्रामक तरीके से उनका सामना नहीं करता। वह पहले अपने निर्देशों का परिचय पूरे समूह को देते हैं। यहाँ ४:१-३ में पौलुस कहते हैं कि "स्थिर रहो" और उन महिलाओं के विषय में बात करते हैं जिन्होंने "उनके साथ परिश्रम किया था।" यही निर्देश पहले पूरे समूह को १:२७ में दिए गए थे। यह भी ध्यान दें कि पौलुस दो महिलाओं के बीच असहमति के संबंध में निष्पक्ष रहते हैं। वह किसी ऐसे से हस्तक्षेप करने के लिए कहते हैं जो स्थिति के करीब है और जो बेहतर सूचित है।

१८. मेरे साथ परिश्रम किया (पद ३) – का अर्थ है खिलाड़ियों के एक दल को चित्रित करना जो एक समान लक्ष्य के लिए एक साथ खेलते हैं। पौलुस ने दोनों महिलाओं को "समन्वय" में रहने के लिए प्रोत्साहित किया और फिर उन्हें उन दिनों की स्मरण दिलाई जब वे समन्वय में थीं। पौलुस ने अगुआई की बहुलता के तहत दूसरों के साथ सेवा की। उन्होंने "प्रेरितों के दल" में काम किया।

१९. कोमलता (पद ५) – का अर्थ है कि आप जितने के योग्य हैं उससे कम में संतुष्ट होना; एक विनम्र और धैर्यवान दृढ़ता जो घृणा में प्रतिक्रिया किए बिना अन्याय के अधीन हो सकती है। यह परमेश्वर की संप्रभुता में भरोसा करती है।

२०. चिन्ता (पद ६) - का अर्थ है चिंतित होना; परेशान होना। अधिकतर, पौलुस इस शब्द का प्रयोग नकारात्मक संदर्भ में करते हैं। हालाँकि, इसका उपयोग सकारात्मक अर्थों में भी किया जाता है। ऐसा लगता है कि अंतर चिंता की वस्तु पर निर्भर करता है। दूसरों के लिए चिंता या परेशान होना एक महान प्रेरक हो सकता है। और इसलिए हम वही यूनानी शब्द फिलि. २:२०, १ कुरिं. १२:२५, और २ कुरि. ११:२८ में देखते हैं। शब्द का सकारात्मक उपयोग क्रिया पर ध्यान केंद्रित करना भी लगता है (चिंता कार्रवाई की ओर ले जाती है)। शब्द का नकारात्मक उपयोग कार्रवाई की कमी पर केंद्रित है। यह उन विचारों पर केंद्रित है जो चिंता का कारण बनते हैं।

टिप्पणियाँ -

२१. निवेदन (पद ६) - का अर्थ है आपकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए विनती।

२२. सुरिक्षत (पद ७) - का अर्थ एक सैन्य शब्द है जिसका उपयोग उन सैनिकों की नौकरी का वर्णन करने के लिए किया जाता था जो शहर के फाटकों के अंदर पहरा देते थे। वे नियंत्रण रखते थे की शहर से बाहर क्या जा रहा है। परमेश्वर की शान्ति बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करती। यह हमारे भीतर है। परमेश्वर की शान्ति अंदर से एक रक्षक के समान है जो बाहर जाने वाली चीजों को नियंत्रित करता है। वह उन शब्दों, विचारों और कार्यों को बाहर निकलने की अनुमति नहीं देते हैं जो चिंता पैदा करेंगे।

२३. आदरणीय (पद ८) - का अर्थ है राजसी; सम्मान के योग्य; कुछ ऐसा जो विस्मय को प्रेरित करता है।

ग. खंड #२ की संरचना का अध्ययन।

१. अवलोकन/व्याख्या/अनुप्रयोग।

क. अवलोकन और व्याख्या।

१) हम इस खंड को पाँच भागों में बाँट सकते हैं:

क) एक सामान्य चुनौती (३:१)।

ख) चेतावनियाँ (३:२-४:१)।

ग) एकता के लिए एक दलील (४:२, ३)।

घ) आनन्दित होने के लिए दोहरायी गई चुनौती (४:४-७)।

ङ) एक समापन निर्देश या चुनौती (४:८, ९)।

२) स्पष्ट ज़ोर भाग दो (चेतावनियों) पर दिया गया है।

३) भाग एक में पौलुस पत्र की सामान्य चुनौती को दोहराते हैं। यह भाग दो में चेतावनियों के परिचय के रूप में भी कार्य करता है।

४) पौलुस कहते हैं कि उसकी चुनौती **"तुम्हारे लिए एक सुरक्षा है।"**

टिप्पणियाँ -

व्याख्यात्मक प्रश्न

वे किसके विरुद्ध सुरक्षित रहेंगे?

५) पद २ में पौलुस इस प्रश्न का उत्तर देते हैं जब वह निम्न से **"चौकस रहो"** की चेतावनी देते हैं:

क) कुत्तों

ख) बुरे काम करनेवालों

ग) काट कूट करनेवालों

६) अधिक विशेष रूप से, उन्हें उन लोगों से सावधान रहना चाहिए जो शरीर पर भरोसा रखते हैं (पद ३)। पौलुस अन्यजातियों को संदर्भित करने के लिए **"कुत्तों"** शब्द का उपयोग नहीं करेंगे। वह संभवतः इसका उपयोग यहूदियों को उनके स्वयं के शब्द (शब्द अध्ययन देखें) का उपयोग करके एक मज़बूत फटकार लगाने के प्रयास में यहूदियों को संदर्भित करने के लिए करते हैं। साथ ही **"खतने"** के विचार का उपयोग उसी रीति और उसी कारण से किया जा सकता है।

क) यहूदीवादी लोग शरीर पर भरोसा कर रहे थे (शब्द अध्ययन देखें)। पौलुस फिलिप्पी के लोगों को यहूदियों के मिश्रित सुसमाचार के विषय में चेतावनी दे रहे हैं।

ख) वह वास्तव में एक अलग सुसमाचार था। इस प्रकार, पौलुस इस समस्या के प्रति अपने रवैये में बहुत मज़बूत हैं (देखें गला. १:८, ९)।

टिप्पणियाँ -

व्याख्यात्मक प्रश्न

"झूठे खतने" का क्या अर्थ है?

७) इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए पौलुस एक अंतर प्रदान करते हैं।

क) संरचना के निम्नलिखित आरेख का अध्ययन करें।

झूठा खतना (प.२)	सच्चा खतना (प.३)
	आत्मा में आराधना / यीशु में महिमा
	परन्तु शरीर पर कोई भरोसा नहीं

ख) यदि **"सच्चा"** खतना शरीर पर कोई भरोसा नहीं रखता तो झूठा खतना **"शरीर पर भरोसा रखता है।"**

व्याख्यात्मक प्रश्न

शरीर पर भरोसा रखने का क्या अर्थ है?

८) हम इस प्रश्न का उत्तर पद ४-६ में दोहराव को देखकर दे सकते हैं, जहाँ पौलुस उन कारणों की एक सूची देते हैं कि वह सरलता से शरीर पर भरोसा क्यों कर सकते हैं। पौलुस की सूची में "व्यवस्था" शब्द दोहराया गया है। "व्यवस्था" के संदर्भ भी दोहराए गए हैं।

क) शरीर पर भरोसा - का अर्थ है **"व्यवस्था"** के माध्यम से स्वयं में विश्वास।

ख) यह पद ९ में और अधिक स्पष्ट रूप से कहा गया है जब पौलुस कहते हैं: "न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है।"

टिप्पणियाँ -

ख. अनुप्रयोग।

१) क्या आप में **"झूठा खतना"** है? क्या आप महिमा करते हो और शरीर पर भरोसा रखते हो? क्या आपको अपने पर और अपनी क्षमताओं पर भरोसा है? क्या आप विश्वास के द्वारा परमेश्वर से मुफ्त उद्धार पाते हैं? या क्या आप अपने विषय में अच्छा महसूस करने के लिए अपने अच्छे कार्यों के माध्यम से इसे अर्जित करने का प्रयास करते हैं?

२) क्या आप विश्वास के द्वारा पाप की क्षमा प्राप्त करते हैं? क्या आप उसके साथ एक निरंतर संबंध में धन्यवाद के साथ परमेश्वर को प्रत्युत्तर देते हैं जिसके परिणामस्वरूप वह आपके द्वारा अच्छे कार्य करते हैं? या क्या आप पहले अपने पापों के लिए अच्छे कामों से भुगतान करके अपने विषय में अच्छा महसूस करने का प्रयास करते हैं? क्या आप अपने कार्यों से स्वयं को क्षमा करते हैं या क्या आप परमेश्वर को उसकी कृपा से आपको क्षमा करने की अनुमति देते हैं?

२. अवलोकन/व्याख्या/अनुप्रयोग।

क. अवलोकन और व्याख्या।

१) ३:१ में पौलुस एक सामान्य चुनौती देते हैं जो **"झूठे खतने"** के विरुद्ध चेतावनियों के परिचय के रूप में भी कार्य करती है। यह **"सच्चे खतने"** के विपरीत है।

व्याख्यात्मक प्रश्न

सच्चे खतना वाला होने का क्या अर्थ है?

२) सच्चे खतने वाले शरीर पर भरोसा नहीं करते हैं (पद ३)।

टिप्पणियाँ -

३) वे मसीह को प्राप्त करने के लिए शरीर पर भरोसा करना छोड़ देते हैं (पद ७)। वे एक चीज के लिए दूसरी को बदल लेते हैं।

क) पौलुस के लिए, यह लेन-देन एक बराबर लेन-देन नहीं था। शरीर रखने की तुलना में मसीह को पा लेना कहीं अधिक मूल्यवान था। हम इस लेन-देन की तुलना उस लेन-देन से कर सकते हैं जो एक हाई स्कूल के खेल खिलाड़ी का एक प्रसिद्ध राष्ट्रीय खेल खिलाड़ी के लिए हो सकता है। यह एक बड़ा लेन-देन था!

ख) पद ९ की संरचना के निम्नलिखित आरेख का अध्ययन करें। यह लेन-देन की प्रकृति को दिखाएगा।

आत्म-धार्मिकता	का लेन-देन	परमेश्वर की धार्मिकता के लिए
व्यवस्था	का लेन-देन	विश्वास के लिए

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस क्यों यह लेन-देन करना चाहता है?

४) पौलुस इसका उत्तर पद १० में **"ताकि मैं जानूँ"** (अनुभवात्मक ज्ञान) शब्दों के साथ देते हैं। उन्होंने इस उद्देश्य का संकेत पहले दिया था:

क) पद ८ ("जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूँ")।

ख) पद ९ ("उसमें पाया जाऊँ")।

५) हालाँकि, अब पद १० में पौलुस अधिक सशक्त और विशिष्ट हैं। उनका उद्देश्य है:

क) "उन्हें" जानूँ।

ख) "उनके पुनरुत्थान की सामर्थ" को जानूँ।

ग) "उनके कष्टों की सहभागिता (भागीदारी)" को जानूँ।

टिप्पणियाँ -

६) पौलुस यह लेन-देन परमेश्वर के साथ **"सम्बन्ध"** प्राप्त करने के लिए करेंगे। निम्नलिखित आरेख पर विचार करें।

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस अपने उद्देश्य को कैसे पूरा कर पाएगा?

७) पौलुस इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए कृदंत **"ताकि"** का उपयोग करते हैं।

क) "पौलुस उनकी मृत्यु, उनके पुनरुत्थान की सामर्थ और उनके साथ दु:खों में सहभागी होकर उनको जानेंगे।"

ख) स्वयं को मारना विधि है। यह यीशु की विधि थी और अब यह पौलुस की विधि भी होनी चाहिए।

८) यीशु ने स्वयं को शून्य कर दिया (२:७) और क्रूस पर मर गए (२:८)। जब उन्होंने ऐसा किया:

क) जब वह पिता के दाहिने ओर बैठा, तब उन्होंने पिता के साथ एक सिद्ध संबंध प्राप्त किया ("उसे जानूँ")।

ख) वह पुनर्जीवित हो गए ("उनके पुनरुत्थान की सामर्थ" को जानूँ")।

ग) उन्होंने कष्ट उठाया ("उनके कष्टों की सहभागिता को जानूँ")।

टिप्पणियाँ -

९) हाँ! क्रूस यीशु के लिए था और अब पौलुस के लिए एकमात्र विधि है। एक विधि के अस्तित्व का तात्पर्य परिणाम की आशा से है।

व्याख्यात्मक प्रश्न

इस सबका क्या परिणाम होगा?

१०) पौलुस पद ११ में "किसी भी रीति से" शब्दों के साथ उत्तर देते हैं।

क) वास्तव में यूनानी में **"यदि संभवत:"** है। यह दिखने वाले परिणाम के लिए इच्छा या आशा व्यक्त करता है।

ख) इच्छा रखा परिणाम "मृतकों से" "पुनरुत्थान" (पद १० में यूनानी शब्द अनास्टेसिस के बजाय यूनानी शब्द "एक्सानास्टेसिस") है। यह अनन्त जीवन पाना है। जैसा कि हम पद १२ में देखेंगे, यह सिद्ध बनना है। पौलुस यहाँ दो काम कर रहे होंगे। सबसे पहले, वह मृत्यु और जीवन के बीच धर्मविज्ञान संबंध पर ज़ोर देने का अवसर ले रहे हैं। वह कह रहे हैं कि जीने के लिए मरना आवश्यक है। अर्थात्, पुनरुत्थान से पहले क्रूस आता है। क्रूस एक विधि है। पुनरुत्थान परिणाम है।

दूसरा, वह इस अवसर का उपयोग पुनरुत्थान को किसी ऐसी चीज़ के रूप में संदर्भित करने के लिए करते हैं जिसे अब भी प्राप्त किया जा सकता है (यह पद ११ में एक्सानास्टेसिस के उपयोग और पद १२ में "सिद्ध" के अर्थ के साथ मिलता है)। वास्तव में अनन्त जीवन एक वर्तमान संभावना है क्योंकि परमेश्वर को जानना भी वर्तमान संभावना है (यूहन्ना १७:३)। इस प्रकार, वह पुनरुत्थान की अंतिम पूर्ति के साथ-साथ वर्तमान संभावना को भी संदर्भित करते हैं।

यह परमेश्वर के राज्य के "पहले से ही/अभी तक नहीं" धर्मविज्ञान के अनुरूप है।

टिप्पणियाँ -

व्याख्यात्मक प्रश्न

क्या पौलुस ने इसे अभी तक प्राप्त किया है?

११) नहीं! वह पद १२ में कहते हैं, "यह मतलब नहीं कि मैं पा चुका हूँ।"

व्याख्यात्मक प्रश्न

क्या वह छोड़ देते हैं?

१२) नहीं! वह कहते हैं, **"पर पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूँ।"** पौलुस का एक **स्वस्थ रवैया** है। वह स्वीकार कर सकते हैं और मानते हैं कि उन्हें सुधार करने की आवश्यकता है। वह सुधार की दिशा में भी आगे बढ़ते हैं। पौलुस कह सकते हैं:

क) मैंने अभी तक इसे पाया नहीं है।

ख) मैं आगे बढ़ूंगा।

१३) उनका अभी तक प्राप्त न करना उन्हें आगे बढ़ने में निराश नहीं करता है। उनका आगे बढ़ना उन्हें उनकी कमी को मानने से नहीं रोकता है। यह एक स्वस्थ रवैया है।

क) इस रवैये का दृष्टिकोण आगे देखना है और जो पीछे है उसे भूलना है (पद १३)।

ख) इस रवैये की कल्पना (जैसा कि ग्रीक शब्दों में देखा गया है) एक दौड़ने वाले की है जो सब सहता हुए लक्ष्य पर टिका हुआ है, परन्तु उससे दूरी से अभिभूत नहीं है। साथ ही वह इस अहसास या स्वीकृति की कमी के कारण झूठे भरोसे में नहीं पड़ते कि वह अभी तक वहाँ नहीं है।

ग) यहाँ दौड़ की समानता के कुछ अन्य उपयोगों का अध्ययन करना सहायक हो सकता है (१ कुरिं. ९:२४-२७; १ तीमु. ६:१२; २ तीमु. ४:७, ८; इब्रा. १२:१; मत्ती २४:१३)।

टिप्पणियाँ -

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस कैसे प्रेरित रहते हैं?

१४) पौलुस पद १२ में अपनी प्रेरणा का उल्लेख करते हैं। यह एक **तार्किक** प्रेरणा है। वह कहते हैं, "उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूँ, जिसके लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था।" पौलुस कहते हैं:

क) कि मैं अपने लिए मसीह के उद्देश्य के संबंधी **लगातार बना रहूँ** (पौलुस के लिए उसका लक्ष्य मसीह का लक्ष्य है)।

ख) ताकि जिस **कारण से परमेश्वर ने मुझे चुना है, वह साकार हो जाएगा।**

ग) कि मैं पहले तो **वह प्राप्त कर सकूँ जो मेरे चुने जाने के पूरे कारण का प्रतिनिधित्व करता है।**

व्याख्यात्मक प्रश्न

इस स्वस्थ रवैये के विषय में अपने विवरण के साथ पौलुस क्या दर्शाता है?

१५) तात्पर्य स्पष्ट है। पौलुस, फिर से (देखें १:६ और २:१२), उद्धार के **प्रक्रिया** होने के विचार पर जोर दे रहे हैं। **"दौड़ा चला जाता हूँ"** (पद १२), **"बढ़ता हुआ"** (पद १३), **"की ओर"** (पद १४) जैसे सभी वाक्यांश एक **प्रक्रिया** के अस्तित्व को दर्शाते हैं।

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस स्वस्थ रवैये को कैसे लागू करते हैं?

टिप्पणियाँ -

१६) पद १५क में पौलुस फिलिप्पी के लोगों को **स्वस्थ रवैया** रखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इसके बाद वह इसे लागू करते हैं। अनुप्रयोग के निम्नलिखित आरेख का अध्ययन करें।

स्वस्थ रवैया	स्वस्थ रवैये का अनुप्रयोग
यह मतलब नहीं कि मैं पा चुका हूँ (प. १२)	और यदि किसी बात में तुम्हारा और ही विचार हो (प. १५ख)
दौड़ा चला जाता हूँ (प. १२)	इसलिये (फिर भी) जहाँ तक हम पहुँचे हैं, उसी के अनुसार चलें (प. १६)। यह भी निहित है कि आप आगे बढ़ेंगे जब पौलुस कहते हैं कि तो परमेश्वर उसे भी तुम पर प्रगट कर देगा (प. १५ग)।

व्याख्यात्मक प्रश्न

उनके विषय में क्या जिन्हें पहले झूठे खतने के रूप में संदर्भित किया गया था?
क्या वे मसीही हैं?

१७) पौलुस इस प्रश्न का बहुत सीधा उत्तर देते हैं। पद १८ में वह कहते हैं कि वे "मसीह के क्रूस के बैरी" हैं। नहीं, वे मसीही नहीं हैं।

१८) स्मरण रखें, पौलुस ने अभी-अभी लोगों के दो अलग-अलग समूहों के विषय में लिखना समाप्त किया है:

क) **सच्चा खतना।**

ख) **झूठा खतना।**

टिप्पणियाँ -

१९) अब वह **दो "चाल चलने"** के विषय में बताकर उनके बीच अंतर करते हैं।

क) पौलुस के उदाहरण और दूसरों के प्रतिमान के अनुसार चलना (पद १७)।

ख) उन लोगों की चाल जो मसीह के क्रूस के बैरी हैं (पद १८)। उनका अंत विनाश है। वे अपनी लज्जा और पृथ्वी की वस्तुओं के अनुसार चलते हैं (पद १९)। उनके पास शारीरिक या सांसारिक चाल है।

व्याख्यात्मक प्रश्न

मसीहियों को इस शारीरिक या सांसारिक चाल से बचने की आवश्यकता क्यों है?

२०) यह वह प्रश्न है जिसका उत्तर पौलुस तब देना आरम्भ करते हैं जब वह पद २० में जोड़ने वाले शब्द **"पर"** का उपयोग करते हैं।

क) उत्तर है इसलिए क्योंकि हम स्वर्ग के नागरिक हैं। हम सांसारिक नहीं हैं। हम स्वर्गीय हैं। जैसा कि पौलुस अक्सर कहते हैं (उदाहरण के लिए, इफिसियों ५:८ देखें) अन्य बाइबल गद्यांशों में, वह यहाँ फिर से कहते हैं: तुम जो हो उनके अनुसार चलो।

ख) विचार के प्रवाह को समझने के लिए आरेख का अध्ययन करें। ध्यान दें कि खंड को कैसे विपरीत रूप में व्यवस्थित किया गया है। पौलुस के लिए, यह काला और सफेद है।

वे कौन हैं	वे कैसे चलते हैं	वे कहाँ से हैं
सच्चा खतना	सच्चा चलना: पौलुस और अन्य उदाहरण हैं	स्वर्ग
झूठा खतना	झूठा चलना : वे मसीह के शत्रु हैं	दुनिया/शरीर

टिप्पणियाँ -

व्याख्यात्मक प्रश्न

यह **"स्वर्गीयपन"** अंततः कैसे पूरी रीति से साकार होगा?

२१) पौलुस इस प्रश्न का उत्तर पद २१ में देते हैं। हमारे शरीर को नाशवान शरीर से आत्मिक शरीर में बदल दिया जाएगा। हमारा "स्वर्गीयपन" अभी पूरा नहीं हुआ है क्योंकि हमारे पास अभी भी नाशवान शरीर है। यह अक्सर हमारी चाल में समस्या का कारण बनता है (देखें मत्ती २६:४१; रोमि. ७:१४-२०; गला. ५:१७)। हालाँकि, किसी दिन हमारे शरीर बदल जाएंगे और हमारी आत्माओं में बदलाव के अनुरूप होंगे।

क) यह परमेश्वर की संप्रभुता के माध्यम से किया जाएगा (पद २०,२१)।

ख) परमेश्वर हम में कार्य के आरम्भ में संप्रभु हैं (१:६)। वह इस प्रक्रिया के दौरान संप्रभु है (१:६; २:१३)। वह हम में कार्य को पूरा करने में भी संप्रभु हैं (१:६; ३:२०, २१)।

व्याख्यात्मक प्रश्न

इस भविष्य के तथ्य का तात्पर्य क्या है?

२२) तो पौलुस तात्पर्य का परिचय तब देते हैं जब वह ४:१ में "इसलिये" कहते हैं।

क) भविष्य में क्या होगा, इसका तात्पर्य यह है कि फिलिप्पी वासियों को अब **"प्रभु में इसी प्रकार स्थिर रहना"** चाहिए। धीरज आशा से आता है।

ख) हम संभवतः ध्यान दें कि **"स्थिर रहना"** वही है जो पौलुस ने पहले ही १:२७ में लिखा है।

टिप्पणियाँ -

ख. अनुप्रयोग।

१) मसीह आपके लिए कितने मूल्यवान हैं? क्या आप अपने अतीत में सांसारिक मूल्य की हर चीज को मसीह को प्राप्त करने के सम्बन्ध में कचरा समझेंगे? आपकी उपलब्धियों के विषय में क्या? आपका पैसा? आपकी प्रतिष्ठा?

२) आपके जीवन का उद्देश्य क्या है? क्या वह परमेश्वर को जानना है? या दुनिया की सफलता की परिभाषा के अनुसार "सफल" होना है? जब आप सुबह उठते हैं, तो आप उस दिन जीवित होने का उद्देश्य क्या मानते हैं? क्या वह परमेश्वर को जानना है? क्या आप मानते हैं कि परमेश्वर को जानने का एकमात्र तरीका मसीह की मृत्यु है? क्या आप समझते हैं कि इसमें आपकी अपनी "मृत्यु" भी सम्मिलित है। यीशु को जानने के लिए आपको स्वयं मरना होगा!

३) क्या आपके लिए मसीह का लक्ष्य ही आपके जीवन का लक्ष्य है? स्मरण रखें कि आपके लिए परमेश्वर का लक्ष्य मसीह के स्वरूप में परिवर्तित होना है (रोमियों ८:२९)। क्या आप इस लक्ष्य को अपने जीवन के सभी पहलुओं में मानते हैं? क्या यह आपके लिए एक वास्तविकता है? क्या आपको एहसास है कि आपको बदला जा रहा है? क्या आप बदलना चाहते हैं? क्या आप प्रत्येक दिन की सफलता या असफलता को उस लक्ष्य के अनुसार आंकते हैं? क्या आप इसे एक प्रक्रिया के रूप में देखते हैं? क्या आप परिणाम देखने के लिए समय की कीमत चुकाने को तैयार हैं?

४) किस प्रकार का रवैया आपके जीवन को नियंत्रित करता है? क्या वह एक स्वस्थ रवैया है? क्या आप स्वीकार कर सकते हैं कि आप गलतियाँ करते हैं? क्या आप उन गलतियों से सीख कर और निराश हुए बिना आगे बढ़ सकते हैं? या क्या आप केवल वही करने को तैयार हैं जो आप "सिद्धता से" कर सकते हैं? या आप केवल इसलिए कुछ नहीं करते हैं क्योंकि आपके पास निराशा का रवैया है जो आपके कार्यों को नियंत्रित करता है?

५) आपके मसीही जीवन की तस्वीर कैसी दिखती है? क्या आप एक दौड़ने वाले के समान तीव्र हैं जो समापन रेखा की ओर बढ़ रहा है और जिसकी आंखें उस पर टिकी हैं? या आप में से एक की तस्वीर झूले पर झूल रही है?

६) क्या आप अपने शरीर में रूपांतरित होने की भविष्य की आशा से अपने जीवन में व्यावहारिक आशा प्राप्त करते हैं? क्या भविष्य की आशा आज आपको दृढ़ रहने देती है? या आप आज कमज़ोर हैं क्योंकि आपका ध्यान अतीत या वर्तमान परिस्थितियों पर है?

टिप्पणियाँ -

३. अवलोकन/व्याख्या/अनुप्रयोग।

क. अवलोकन और व्याख्या।

१) ४:१ में पौलुस अच्छी चाल चलने पर अपने विचारों को समाप्त कर रहा है, और साथ ही वह एक विशिष्ट मामले में एकता को धीरे से प्रोत्साहित करने की तैयारी कर रहे हैं। वह इसे एकता में रहने के लिए पहले के एक उपदेश को दोहराने के माध्यम से करते हैं (देखें १:२७)।

व्याख्यात्मक प्रश्न

वे कौन हैं जो विशिष्ट मामले में सम्मिलित हैं?

२) पौलुस पद २ में कहते हैं **"मैं समझाता हूँ"** (दो बार)। वह पद ३ में कहते हैं **"मैं तुझ से भी विनती करता हूँ।"** जो इन क्रियाओं में से प्रत्येक के तहत हैं, वे लोग सम्मिलित हैं।

क) यूओदिया और सुन्तुखे (उन्हें सामंजस्य में होने की आवश्यकता है)।

ख) **"सच्चे सहकर्मी"** (वह उन्हें एक साथ लाने में सहायता करेंगे)।

ग) आगे की टिप्पणी के लिए पद २, ३ से सम्बंधित शब्द अध्ययन देखें कि ये लोग कौन थे और पौलुस ने उन्हें कैसे सलाह दी थी।

ख. अनुप्रयोग।

१) क्या आप अपनी कलीसिया में "यूओदिया" या "सुन्तुखे" हैं? क्या आप व्यक्तित्व संघर्षों को एकता के अभाव का स्रोत बनने देते हैं? क्या आप अपने से अलग अन्य लोगों के साथ चल सकते और काम कर सकते हैं?

टिप्पणियाँ -

लेखक का उदाहरण:

निम्नलिखित कविता पर विचार करें:

अपने प्रिय संतों के साथ ऊपर रहना
ओ यह निश्चित रूप से महिमा होगी।
परन्तु परिचित संतों के साथ नीचे रहना
वह एक और ही कहानी है।

अपना उदाहरण डालें:

२) क्या आप अकेले या दल के भाग के रूप में काम करते हैं? क्या आप कलीसिया को एक दल के रूप में देखते हैं? एक देह?

४. अवलोकन/व्याख्या/अनुप्रयोग।

क. अवलोकन और व्याख्या।

१) जब पौलुस एकता के विषय में विशिष्ट निर्देश देते हैं तो वह आनन्द करने के लिए अपनी सामान्य चुनौती को दोहराते हैं: "प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूँ, आनन्दित रहो!"

टिप्पणियाँ -

व्याख्यात्मक प्रश्न

फिलिप्पी के लोगों के लिए आनन्दित होना इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

२) इस प्रश्न का उत्तर स्पष्ट नहीं है। यह सुसमाचार प्रचार से सम्बंधित प्रतीत होता है। पौलुस पद ५ में "प्रभु निकट है" कहकर समाप्त करते हैं। ऐसा लगता है कि यह "हमेशा आनन्दित" होने और "सहनशील आत्मा" (शब्द अध्ययन देखें) का कारण है।

क) यह सहनशील आत्मा "सब मनुष्यों के द्वारा जानी जाने" की है। यह एक गवाह होना है। उन्हें हमेशा आनन्दित रहना है। इसमें सताव के बीच आनन्दित होना सम्मिलित है (निश्चित रूप से पौलुस उस उदाहरण को प्रतिबिंबित कर रहे हैं जो वह उनके पास छोड़कर आये थे, जब उनकी अपनी मूल यात्रा के दौरान उन्हें और सीलास को कैद किया था: प्रेरितों के काम १६ देखें)।

ख) उन पर अत्याचार करने वालों के प्रति घृणा और कड़वाहट (सहनशीलता) के प्रति उनका आत्म-संयम सभी मनुष्यों द्वारा देखा जाना चाहिए। यह सभी चीजों में आनन्दित होने से पूरा होता है।

ग) आनन्दित होने का महत्व तत्काल सुसमाचार प्रचार की आवश्यकता के कारण है। "प्रभु निकट है।"

व्याख्यात्मक प्रश्न

क्या आनन्दित होने का कोई विकल्प है?

३) हाँ! पौलुस कहते हैं, "हमेशा आनन्दित रहो।" फिर वह पद ६ में कहते हैं कि "किसी भी बात की चिन्ता मत करो।"

क) आनन्दित होने का विकल्प चिंता करना है।

ख) विपरीत या विकल्प की निम्नलिखित संरचना पर विचार करें।

	क्रिया	कब	
विलोम	आनन्द करो	हमेशा	विलोम
	चिंतित हों	कभी नहीं	

टिप्पणियाँ -

व्याख्यात्मक प्रश्न

वे इस चिंता से कैसे बच सकते हैं?

४) पौलुस "परन्तु" (पद ६) शब्द के साथ समाधान बताते हैं। प्रार्थना और धन्यवाद के माध्यम से चिंता से बचा जा सकता है। यदि हम प्रार्थना करें और धन्यवाद दें तो हमें चिंता नहीं होगी। यदि हम चिंता करते हैं तो हम प्रार्थना नहीं करेंगे और धन्यवाद नहीं देंगे।

क) विपरीत समाधान के रूप में प्रतिस्थापन की ओर संकेत देते हैं। संदर्भ यह भी इंगित करता है कि पौलुस प्रतिस्थापन के विषय में बात कर रहे हैं (पद ८ में चिंतित विचारों को अच्छे विचारों से बदलना है: कुलु. ३:२ भी देखें)।

ख) चीजों के विषय में चिंता करने को चीजों के विषय में प्रार्थना करने से प्रतिस्थापित किया गया है। प्रतिस्थापन की इस विधि का परिणाम चिंता के विपरीत है। परिणाम शान्ति है (पद ७)।

ख. अनुप्रयोग।

१) क्या आपको एहसास है कि आपकी गवाही आपके स्वभाव से अत्यधिक प्रभावित होती है? सुसमाचार प्रचार में आनन्दित होने का रवैया महत्वपूर्ण है। क्या आप आनन्द वाले व्यक्ति हैं? क्या आप बुरे समय में प्रभु में आनन्दित हो सकते हैं?

२) क्या आप चिंता के संबंध में प्रतिस्थापन का अभ्यास करते हैं? क्या आप चिंता करने में समय बर्बाद करते हैं या आप उसे प्रार्थना में बिताए समय से बदल देते हैं? क्या आप नकारात्मक विचारों को सकारात्मक विचारों से बदलते हैं? क्या आप परमेश्वर की शान्ति को जानते हैं? यह शान्ति प्रार्थना का परिणाम है क्योंकि प्रार्थना चीजों को परमेश्वर तक पहुँचाती है और उनकी संप्रभुता पर स्थिर है। क्या आप क्लेशों के बीच शान्ति से रह सकते हैं?

टिप्पणियाँ -

५. अवलोकन/व्याख्या/अनुप्रयोग।

क. अवलोकन और व्याख्या।

१) पौलुस शिक्षाप्रद चुनौतियों के इस खंड के जीवन के विचार में संभावित प्रतिस्थापन की एक श्रृंखला के साथ निष्कर्ष **("इसलिए":** पद ८) निकालते हैं।

क) सबसे बड़ा प्रतिस्थापन वह है जिसके विषय में पौलुस गला. २:२० में लिखते हैं। अर्थात्, अपने जीवन को मसीह के जीवन से बदलना।

ख) पौलुस एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण है जिसने ऐसा किया है। इसलिए वह फिलिप्पी वासियों को उसके उदाहरण की नक़ल करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं (जो कि मसीह की नक़ल करना है: १कुरिं. ११:१)।

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस की सलाह मानने का क्या परिणाम है?

२) परिणाम यह है कि "शान्ति का परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा" (पद ९)।

क) चिंता को प्रार्थना से बदलने का परिणाम यह हुआ कि "परमेश्वर की शान्ति" उनके साथ हुई।

ख) अपने जीवन को मसीह के जीवन से बदलने का परिणाम यह है कि उस "शान्ति के परमेश्वर" "तुम्हारे साथ रहेंगे।"

ग) परमेश्वर की शान्ति होना एक बात है। उस शान्ति के परमेश्वर का होना दूसरी बात है। अंतर अपनी प्रार्थनाओं पर काम करने में है। पौलुस प्रार्थना करने के प्रोत्साहन के साथ नहीं रुकते। वह उनको नींव बनाते हैं। परन्तु यह एक नींव है जो कार्रवाई करती है ("किया करो": पद ९)। कर्म के बिना प्रार्थना कर्म के बिना विश्वास के समान है। यह मरी हुई है। यह मरी हुई है क्योंकि वास्तव में आपके साथ उन शान्ति के परमेश्वर के बिना आपके साथ परमेश्वर की शान्ति संभव नहीं है!

टिप्पणियाँ -

ख. अनुप्रयोग।

१) क्या आप अपने जीवन में शान्ति के उन परमेश्वर को अपने जीवन में प्राप्त किए बिना परमेश्वर की शान्ति पाने का प्रयास करते हैं?

२) क्या आप अपनी प्रार्थनाओं पर काम करते हैं? क्या आपका विश्वास काम पैदा करता है?

घ. खंड #२ की संरचना की एक रूपरेखा।

१. पत्र की सामान्य चुनौती का दोहराना (३:१)।

२. उन लोगों के विरुद्ध चेतावनी जो मसीह के नहीं हैं (३:२-२१)।

क. सच्चे और झूठे खतना के बीच अंतर पर उपदेश (पद २-१०)।

१) सच्चा खतना शरीर पर कोई भरोसा नहीं रखता (पद ३-६)।

क) शरीर पर भरोसे का विवरण (पद ४-६)।

(१) पौलुस सरलता से शरीर पर भरोसा कर सकते हैं (पद ४)।

(२) क्यों के कारणों की एक सूची (पद ५, ६)।

२) इसके बजाय, सच्चा खतना मसीह को प्राप्त करने के लिए शरीर को नकारता है (पद ७-१६)।

क) सामान्य विवरण या परिचय (पद ७)।

ख) मसीह को जानने के लिए सब कुछ खोने की कीमत लायक है (पद ८)।

टिप्पणियाँ -

ग) विशिष्टता: परमेश्वर की धार्मिकता प्राप्त करने के लिए स्वयं की धार्मिकता को खोना (पद ९-१६)।

(१) **उद्देश्य:** जानना (पद १०)।

(क) "उनको" (पद १०क)।

(ख) "उनके" पुनरुत्थान की सामर्थ (पद १०ख)।

(ग) "उनके" दुःखों में सहभागिता (पद १०ग)।

(२) **विधि:** मृत्यु (पद १०घ)।

(३) **परिणाम:** पुनरुत्थान (पद ११-१६)।

(क) परिणाम का स्पष्टीकरण (पद १२)।

i. अभी तक पूरी रीति से प्राप्त नहीं किया है (पद १२क)।

ii. परन्तु मैं उसकी ओर दौड़ा चला जाता हूँ (पद १२ख)।

(ख) स्पष्टीकरण का पुन: कथन (पद १३, १४)।

i. अभी तक पकड़ा नहीं है (पद १३क)।

ii. परन्तु मैं आगे बढ़ता हूँ और पीछे नहीं देखता (पद १३ख)।

iii. निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ (पद १४)।

(ग) वैसा ही रवैया रखने के लिए प्रोत्साहन (पद १५,१६)।

i. सामान्य रूप से यही विचार रखें (पद १५क)।

ii. यदि आप कुछ विवरणों को नहीं समझते हैं तो परमेश्वर आपकी सहायता करेगा (पद १५ख)।

iii. परन्तु कम से कम उस का उपयोग करें जितना आप समझते हैं (पद १६)।

टिप्पणियाँ -

ख. दो चालों के बीच के अंतर पर उपदेश (पद १७-२१)।

१) पौलुस और अन्य लोगों की चाल का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहन (पद १७)।

२) एक और चाल का अस्तित्व (पद १८, १९)।

क) उस चाल का विवरण (पद १८ख, १९)।

३) पहली चाल चलने का कारण (पद २०-२२)।

क) हमारी स्वर्गीय नागरिकता के कारण (पद २०क)।

ख) जिसका हमारे भविष्य के परिवर्तन में अपना चरमोत्कर्ष और अपना प्रमाण होगा (पद २१क)।

(१) जो उनकी संप्रभुता का परिणाम होगा (पद २१ख)।

(२) तात्पर्य: दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहन (४:१)।

३. एकता के लिए निवेदन (४:२, ३)।

क. यूओदिया और सुन्तुखे का एक मन होना (पद २)।

ख. एक शान्ति बनानेवाले के द्वारा सहायता (पद ३)।

४. बार-बार आनन्दित होने की चुनौती (पद ४-७)।

क. घोषणा (पद ४)।

ख. तत्काल सुसमाचार प्रचार की आवश्यकता के कारण (पद ५)।

ग. इसके विपरीत से बचें जो कि चिंता है (पद ६, ७)।

१) विधि: प्रार्थना और धन्यवाद (पद ६)।

२) परिणाम: शांति (पद ७)।

टिप्पणियाँ -

५. एक समापन निर्देश या चुनौती (पद ८, ९)।

क. किस पर ध्यान लगाया करो (पद ८)।

ख. पौलुस जैसी चाल चलो (पद ९क)।

ग. परिणाम: शान्ति के परमेश्वर आपके साथ हैं[(पद ९ख)।

लेखक की टिप्पणी:

रूपरेखा का उपयोग करते हुए, छात्रों को भागों (परिचय, जारी, विपरीत, स्पष्टीकरण, युक्तिकरण, विनिर्देश, उद्देश्य, विधि, परिणाम, निरंतरता, संतुलन, अनुप्रयोग, चरमोत्कर्ष, औचित्य, तात्पर्य या निष्कर्ष, कारण और प्रभाव, कारण, प्रतिस्थापन)) के बीच संबंधों की पहचान करने के लिए चुनौती दें।

ङ. खंड #२ का निष्कर्ष।

१. सारांश वाक्य। पौलुस चुनौतीपूर्ण निर्देश देते हैं जो आनन्द करने, एकता और अशुद्ध प्रभावों के विरुद्ध चेतावनियों पर ध्यान केंद्रित करता है।

२. शीर्षक। चुनौतीपूर्ण निर्देश जारी।

IV. खंड #३ (फिलि. ४:१०-२०)।

क. खंड #३ का परिचय।

१. यह खंड, हालाँकि अनुलेख प्रतीत होता है, पर यह पत्र की सामग्री और उद्देश्य का एक बहुत ही महत्वपूर्ण भाग है।

२) हम खंड को पाँच भागों में विभाजित कर सकते हैं:

क) पौलुस हेतु फिलिप्पी वासियों की चिंता के लिए एक सामान्य प्रतिक्रिया (पद १०-१३)।

ख) उनकी सकारात्मक प्रतिक्रिया की निरंतरता (पद १४-१७)।

ग) एक पुष्टि कि उसे भेंट मिल गई (पद १८)।

टिप्पणियाँ -

घ) उनके देने का परिणाम (पद १९)।

ङ) निष्कर्ष: परमेश्वर की महिमा (पद २०)।

ख. खंड #३ का शब्द अध्ययन।

१. जागृत (पद १०) - का अर्थ है फिर से अंकुरित होना; फिर से खिलना; नई शाखाएँ आना।

२. इस का विचार था (पद १०) - अपूर्ण काल का उपयोग एक निरंतर चिंता का प्रतीक है।

३. सन्तोष (पद ११) - का अर्थ है बाहरी परिस्थितियों से स्वतंत्र होना; आत्मनिर्भर होना; दूसरों की सहायता पर निर्भर नहीं होना। नि:संदेह, पौलुस मसीह पर निर्भर था। वह स्वयं या अन्य लोगों पर निर्भर नहीं था। यह कुछ ऐसा था जिसे उसे सीखना पड़ा (देखें पद १३)।

४. थिस्सलुनीके में भी (पद १६) - इसका अर्थ है कि थिस्सलुनीके फिलिप्पी की तुलना में अधिक धनी कलीसिया थी। फिर भी, जब पौलुस ने थिस्सलुनीके में सेवा की, तो वह गरीब फिलिप्पी की कलीसिया थी जिसने उसकी सहायता की थी।

५. लाभ (पद १७) - का अर्थ है वृद्धि; गुणा करना; ब्याज। पद १५ में आरम्भ हुआ लेन-देन का रूपक सांसारिक निवेशों के लिए स्वर्गीय लाभांश प्राप्त करने का वर्णन करता है।

६. सुखदायक सुगन्ध (पद १८) - का अर्थ है ग्रहण योग्य बलिदान। सुसमाचार के कार्य के लिए देना परमेश्वर के लिए एक बलिदान माना जाता है।

७. घटी को पूरी करेगा (पद १९) - वही यूनानी शब्द है जो पद १८ में प्रयोग किया गया है ("मेरे पास सब कुछ है, वरन् बहुतायत से भी है)। जैसे उन्होंने पौलुस को भर दिया, वैसे ही परमेश्वर उन्हें भर देंगे (गला. ६:७; लूका ६:३८)।

८. महिमा सहित (पद १९) - का अर्थ है महिमामय; परमेश्वर उन तरीकों से देते हैं जो उनकी महिमा प्रकट करते हैं।

टिप्पणियाँ -

ग. खंड #३ की संरचना का अध्ययन।

१. अवलोकन/व्याख्या/अनुप्रयोग।

क. अवलोकन और व्याख्या।

१) पौलुस उनकी दी गई सहायता के प्रति अपनी प्रतिक्रिया में धीरे-धीरे आगे बढ़ता है। वह उन आरोपों के विरुद्ध अपना बचाव करने के लिए सावधान रहना चाहते हैं कि वह व्यक्तिगत रूप से सुसमाचार से लाभ उठा रहे हैं। और इसलिए, वह सबसे पहले उनकी चिंता के प्रति सामान्य तरीके से प्रतिक्रिया करते हैं (पद १०-१३)।

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस क्यों प्रत्युत्तर देते हैं?

२) सबसे पहले, पौलुस उन्हें बताते हैं कि क्या कारण नहीं है ("यह नहीं कि मैं": पद ११)।

क) पौलुस उन्हें अपनी अतिरिक्त आवश्यकताओं के विषय में जागरूक करने के तरीके के रूप में उन्हें धन्यवाद देने में समय नहीं लगाता। वह उनसे और सहायता नहीं माँग रहे हैं।

ख) उनका धन्यवाद करने का उद्देश्य उन्हें यह दिखाना नहीं है कि वह उन पर निर्भर है। वास्तव में, वह स्पष्ट रूप से कहते हैं कि वह उन पर निर्भर नहीं हैं।

टिप्पणियाँ -

व्याख्यात्मक प्रश्न

पौलुस किस पर निर्भर है?

३) पद ११ में, पौलुस कहते हैं कि उसने "संतुष्ट होना सीख लिया है" (आत्मनिर्भर)। बिंदु यहाँ यह है कि पौलुस "सेवा-नियुक्त कार्य सहायता" पर निर्भर नहीं है। वह मसीह पर निर्भर है।

क) निश्चित रूप से वह उसके प्रति प्रदान करने के लिए मसीह पर निर्भर करता है, परन्तु "इससे अधिक" वह मसीह पर निर्भर करता है कि वह उसे किसी भी परिस्थिति में जीने के लिए सक्षम कर दे (पद १२, १३)।

ख) इन परिस्थितियों में भूख सम्मिलित हो सकती है (पद १२; १ कुरि. ३:११; २ कुरि. ६:३; ११:२७)।

चर्चा विषय

क्या पौलुस में विश्वास की कमी थी?

यह कहना कि मसीहियों को कभी भी भूखा नहीं रहना चाहिए या उनके पास आवश्यक चीजों की **कमी नहीं** होनी चाहिए, यह कहना होगा कि पौलुस गलत था और उसमें विश्वास की कमी थी। आप क्या सोचते हो?

ग) कठिनाई को नकारना पद १३ के अवसर को हटा देना है। यह मसीह द्वारा गहरे प्रावधान का अनुभव करने के अवसर को हटा देगा। मसीह से भौतिक प्रावधान प्राप्त करना एक बात है। मसीह से आत्मिक (चरित्र निर्माण) प्रावधान प्राप्त करना दूसरी बात है।

घ) पौलुस की शिक्षा दिखावटी नहीं है। यह हमारे आधुनिक समय की कुछ दिखावटी शिक्षाओं के साथ संघर्ष में है। पौलुस ने कभी भी दिखावटी बातों पर ध्यान नहीं दिया। पौलुस के लिए, मसीह ने भौतिक प्रावधान से कहीं अधिक प्रतिनिधित्व किया क्योंकि मसीह का उद्देश्य भौतिक क्षेत्र से कहीं अधिक गहरा था।

टिप्पणियाँ -

ङ) और इसलिए पौलुस इपफ्रुदीतुस की चंगाई पर नहीं, बल्कि उसके द्वारा मसीह के लिए सब कुछ देने के उनके रवैये पर ध्यान केंद्रित करता है। यह चंगाई को कम करने के लिए नहीं है। इसके बजाय, यह मसीह पर ध्यान केंद्रित करना और उसकी छवि में परिवर्तित होना है। पौलुस भौतिक प्रावधान पर ध्यान केंद्रित नहीं करते हैं। इसके बजाय, वह उसमें मसीह की समर्थकारी सामर्थ के आत्मिक प्रावधान पर ध्यान केंद्रित करते हैं (देखें २ कुरिं. १२:९, १०)।

च) यह भौतिक प्रावधानों को कम करने के लिए नहीं है। यह उन्हें केवल परिप्रेक्ष्य में रखना है। उनसे कोई फर्क नहीं पड़ता। फर्क उसमें मसीह के होने से पड़ता है। यह पद १३ की बात है। (अध्ययन मत्ती ६:२५-३३)।

व्याख्यात्मक प्रश्न

तो क्या पौलुस को भेंट भेजना गलत था?

४) नहीं! पौलुस इसे **"तौभी"** (पद १४) शब्द के उपयोग के साथ स्पष्ट रूप से बताता है। उन्होंने उस समय और अतीत में भी इसे भेजकर "अच्छा किया" था (पद १५, १६)।

क) परन्तु फिर से, पौलुस का ध्यान भौतिक भेंट पर नहीं है (पद १७ में "यह नहीं कि" वाक्यांश को दोहराने के द्वारा प्रस्तुत किया गया है)। पौलुस का ध्यान ऊपर की बातों पर केन्द्रित है (कुलु. ३:२)।

ख) उनका धर्मविज्ञान कभी भी भौतिक, अस्थायी चीजों पर ध्यान केंद्रित नहीं करते हैं। वे चीजें केवल अपने अनंत प्रभाव में मूल्य पाती हैं।

५) और इसलिए अंततः पद १७ में, हमारे पास हमारे मूल प्रश्न का उत्तर है। पौलुस क्यों प्रत्युत्तर देते हैं? वह उनकी भेंट से क्यों प्रसन्न है?

क) वह इससे प्रसन्न हैं कि वह उन्हें कैसे लाभ पहुँचाते हैं।

ख) वह प्रसन्न हैं क्योंकि लाभ अनंतकाल का है।

टिप्पणियाँ -

व्याख्यात्मक प्रश्न

तो क्या यहाँ और अभी का कोई अर्थ नहीं है?

६) हाँ, अर्थ है। पौलुस भौतिक चीजों के मूल्य को नकारते नहीं हैं। वह केवल अपने लक्ष्यों के रूप में उन पर ध्यान केंद्रित नहीं करते हैं।

क) पौलुस आगे पद १७ पद, १९ की व्याख्या करते हैं। जैसा कि लूका ६:३८ के संगत में है, वर्तमान में देना वर्तमान में पाने का परिणाम देता है।

ख) पद १७ के **"लाभ"** का एक भाग पद १९ में दिखाया गया है कि यह उनकी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक बहुत ही व्यावहारिक, भौतिक, वर्तमान प्रावधान है (यह पद आत्मिक आशीषों की बात भी करता है: देखें इफि. १:१८; ३:१६-२०)।

७) यहाँ चार महत्वपूर्ण बिंदु बनाए जा सकते हैं:

क) एक सेवा-नियुक्त कार्यकर्त्ता को देना (सुसमाचार के विस्तार के कार्य के लिए) परमेश्वर को स्तुति और धन्यवाद का बलिदान माना जाता है (पद १८)। यह विशेष रूप से सेवा-नियुक्त कार्यकर्त्ता को देने के इस संदर्भ में है कि हम अक्सर उद्धृत पद १९ पाते हैं।

ख) परमेश्वर उनकी आवश्यकताओं की आपूर्ति करते हैं (पद १९)। इसका अर्थ है कि उनकी आवश्यकताएँ हैं। हाँ, मसीही ज़रूरतमंद हो सकते हैं। उनकी आवश्यकता परमेश्वर को उन्हें आपूर्ति करने का अवसर देती है।

ग) जब परमेश्वर मसीहियों के लिए प्रदान करते हैं, तो वह उसे इस रीति से करते हैं जो स्वयं उनको महिमा देते हैं (पद १९ख)।

घ) इसलिए, प्रावधान का निष्कर्ष और ध्यान परमेश्वर को महिमा देने पर होना चाहिए (पद २०)।

ख. अनुप्रयोग।

१) क्या आपको सेवा-नियुक्त कार्य के लिए अपने दान को दोबारा उठाने की आवश्यकता है? क्या आपको एक निश्चित सेवा-नियुक्त कार्यकर्त्ता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता में फिर से खिलने की आवश्यकता है?

२) जब आप दूसरों को धन्यवाद देते हैं तो आपका क्या उद्देश्य होता है? क्या आप गंभीरता से उन्हें धन्यवाद देना चाहते हैं या आपके कोई उल्टे उद्देश्य हैं?

टिप्पणियाँ -

३) प्रावधान के लिए आप किस पर भरोसा करते हैं? आपका परिवार? आपका वेतन? या आप परमेश्वर पर निर्भर हैं? आपके स्वामी कौन हैं? क्या आपकी निर्भरता आपकी शारीरिक स्थिति पर केंद्रित है? या वह एक गहरी निर्भरता पर केंद्रित है? क्या यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप क्या करते हैं और भौतिक रूप से क्या नहीं है? या यह आप में मसीह है या आप में नहीं है पर निर्भर करता है? क्या आप मानते हैं कि सबसे महत्वपूर्ण प्रावधान आप में मसीह का प्रावधान है जो आपकी परिस्थितियों की परवाह किए बिना सभी चीजों को करने की क्षमता प्रदान करता है? क्या आपका प्रावधान आपके पेट से परिभाषित है? आपके शारीरिक स्वास्थ्य से? अपनी भौतिक संपत्ति से? या यह आप में मसीह द्वारा परिभाषित है? मत्ती ६:३३ पर ध्यान करें। क्या आप दिखावटी प्रावधान पर ध्यान केंद्रित करके और उसकी इच्छा करके गहरे प्रावधान के अवसर को दूर करते हैं?

४) क्या आप गंभीरता से चाहते हैं कि दूसरे आपकी सेवकाई को दें ताकि वे आशीषित हों? या आपका ध्यान अपने लाभ पर है?

५) क्या आप देखते हैं और प्रार्थना करते हैं कि जब आप प्रावधान माँगें तो परमेश्वर की महिमा हो?

घ. खंड #३ की संरचना की एक रूपरेखा।

१. उसके लिए उनकी चिंता के प्रति एक सामान्य प्रतिक्रिया (पद १०-१३)।

क. परिचय (पद १०)।

ख. प्रत्युत्तर में उद्देश्य का स्पष्टीकरण (पद ११-१३)।

१) उसकी आवश्यकता को आवाज नहीं देना (पद ११क)।

२) वह विभिन्न स्थितियों के साथ तालमेल बिठाता है (पद ११ख-१२)।

क) जब बहुत कुछ हो (पद १२)।

ख) जब थोड़ा हो (पद १२)।

ग) विधि: उनमें यीशु की शक्ति के माध्यम से (पद १३)।

टिप्पणियाँ -

२. उनकी सकारात्मक प्रतिक्रिया की निरंतरता (पद १४-१७)।

क. वर्तमान स्तुति (पद १४)।

ख. अतीत की स्तुति (पद १५, १६)।

ग. प्रत्युत्तर में उद्देश्य का स्पष्टीकरण (पद १७)।

१) भेंट नहीं माँगना (पद १७क)।

२) उनके लाभ की खोज (पद १७ख)।

३. एक पुष्टि कि उन्हें भेंट मिल गई (पद १८)।

४. उनके देने का परिणाम (पद १९)।

५. निष्कर्ष: परमेश्वर की महिमा (पद २०)।

लेखक की टिप्पणी:

रूपरेखा का उपयोग करते हुए, छात्रों को भागों (विनिर्देश, निरंतरता, जारी, स्पष्टीकरण, युक्तिकरण, विधि, विपरीत, परिणाम, निष्कर्ष) के बीच संबंधों की पहचान करने के लिए चुनौती दें।

ङ. खंड #३ का निष्कर्ष।

१. सारांश वाक्य। पौलुस फिलिप्पी वासियों को उनके अपने स्वयं के लाभ के प्रति दृष्टिकोण के बिना, उनके लाभ और परमेश्वर की महिमा के दृष्टिकोण से उनकी भेंट के लिए धन्यवाद देते हैं।

२. शीर्षक। उनकी भेंट का प्रत्युत्तर।

IV. खंड #४ (फिलि. ४:२१-२३)।

टिप्पणियाँ -

क. धारा #४ का परिचय। पौलुस प्रारूपी अभिवादन और आशीष के साथ पत्र समाप्त करते हैं।

ख. खंड #४ का शब्द अध्ययन।

१. कैसर का घराना (पद २२) - कैसर के रक्त संबंधी (परिवार) नहीं, बल्कि महल में और उसके आसपास दासों और स्वतंत्र लोगों को नियुक्त किया (देखें १:१३)।

ग. खंड #४ की संरचना का अध्ययन।

१. अवलोकन/व्याख्या/अनुप्रयोग।

क. अवलोकन और व्याख्या।

१) यह पत्र का अंत है। तौभी पौलुस बधाई दे रहे हैं। क्या पौलुस अक्सर अभिवादन के साथ समाप्त करते हैं?

२) हाँ। देखें रोमि. १६:३-२३; १ कुरिं. १६:१९, २०; २ कुरि. १३:१२, १३; कुलु. ४:१०-१८.

ख. अनुप्रयोग।

१) क्या आपको अन्य कलीसियाओं के लिए चिंता और दिलचस्पी दिखाना स्मरण रहता है?

२) या अन्य कलीसियाएँ आपकी शत्रु हैं?

घ. खंड #४ की संरचना की रूपरेखा।

ङ. खंड #४ का निष्कर्ष।

टिप्पणियाँ -